

बिजली गिरने की आपदा

भारत डोगरा

31 मई की सुबह पश्चिम बंगाल में बिजली गिरने की विभिन्न घटनाओं में कम से कम 10 लोग मारे गए व 32 घायल हो गए। मौसम वैज्ञानिकों ने बताया कि इस दिन सुबह एक विशाल बादल (सुपर क्लाउड) वर्टिकल रूप लेने लगा था जिससे बिजली गिरने की घटनाओं में मुर्शिदाबाद ज़िले में 5, वर्धमान ज़िले में 2 व पुरुलिया ज़िले में 3 लोग मारे गए, जबकि पश्चिमी मिदनापुर ज़िले में 24 लोग ज़ख्मी हो गए। इनमें से अधिकांश लोग खेतों में काम कर रहे थे या नरेगा में मज़दूरी के लिए जा रहे थे। लगभग सभी निर्धन परिवारों के थे। इससे पहले 30 मई को सुबह चार बजे के आसपास धनबाद ज़िले में बिजली गिरने से तीन लोग मारे गए थे।

कुछ समय पहले एक बड़ा हादसा होते-होते बचा जब 99 यात्रियों को लेकर राजकोट से मुम्बई जा रहे एक वायुयान पर बिजली गिरी और बीच आकाश में इस वायुयान के सभी संचार-संपर्क कट गए। किसी तरह पायलट ने आपात लैंडिंग कर इतने लोगों की जान बचाई, पर ये यात्री एक बड़ी त्रासदी के बहुत नज़दीक पहुंच चुके थे।

आकाश से बिजली गिरने की संभावना आम लोगों में काफी भय उत्पन्न करती है, और इस भय का ठोस आधार भी है। उपलब्ध आंकड़ों को देखें तो आकाशीय बिजली से होने वाली मौतों व लोगों के झुलसे जाने की संख्या काफी अधिक है। इसके बावजूद इस आपदा की ओर राष्ट्रीय स्तर पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया है। हां, झारखंड जैसे राज्यों में जहां यह आपदा अधिक उग्र है वहां इसके प्रति जागरूकता ज़रूर बढ़ी है और न्यायपालिका से भी अच्छे फैसले मिले हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर आकाशीय बिजली की आपदा के अनुसंधान और अध्ययन की उपेक्षा का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इस बारे में पूरी तरह प्रमाणिक आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं हैं। फिर भी जो छिटपुट समाचार व आंकड़े



मिलते रहते हैं उनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रति वर्ष औसतन 2000 से कुछ अधिक ही मौतें इस कारण से होती हैं और इससे कई गुना अधिक लोग ऐसी दुर्घटनाओं में झुलस जाते हैं या घायल हो जाते हैं। यह दुर्घटना ऐसी है कि किसी भी जीव-जंतु को प्रभावित कर सकती है पर पशुओं की कितनी मौतें इस कारण होती हैं इसकी जानकारी उपलब्ध नहीं है। सबसे अधिक क्षति झारखंड, ओड़ीशा व उत्तराखंड में होती हैं, ऐसा अनुमान छिटपुट जानकारियों से लगता है।

इस ओर समुचित ध्यान देना इस कारण और भी ज़रूरी हो गया है कि इस आपदा के भविष्य में और तेज़ी से बढ़ने की संभावना है। नए वैज्ञानिक अनुसंधान से पता चला है कि वायुमंडल में बढ़ते प्रदूषण से अनेक अन्य तरह की क्षति तो होती है, साथ में आकाशीय बिजली गिरने की संभावना भी बढ़ सकती है। जलवायु बदलाव के इस दौर में कार्बन डाईऑक्साइड के अधिक उत्सर्जन से इसकी मात्रा भी वायुमंडल में बढ़ रही है। ताज़े अनुसंधान के अनुसार इस कारण भी आगे चलकर बिजली गिरने की संभावना बढ़ेगी।

दूसरी ओर राष्ट्रीय स्तर पर इस गंभीर व बढ़ती आपदा की ओर उपेक्षा की स्थिति यह है कि केंद्र सरकार की आपदा राहत सहायता में विभिन्न आपदाओं में बिजली गिरने को शामिल ही नहीं किया गया। इस तरह आकाशीय

बिजली गिरने से मरने या झुलसने वाले लोगों के प्रति जिम्मेदारी से केंद्र सरकार ने जैसे मुंह मोड़ लिया है। इस क्षतिपूर्ति का पूरा बोझ अब उन राज्य सरकारों पर ही आ गया है जहां ऐसी दुर्घटनाएं ज़्यादा होती हैं, जबकि अन्य आपदाओं की क्षतिपूर्ति में केंद्र सरकार की प्रमुख भूमिका रहती है।

इस विसंगति को शीघ्र दूर करना चाहिए। साथ ही बिजली गिरने सम्बंधी वैज्ञानिक अनुसंधान व ज़रूरी जानकारियां एकत्र करने के कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। इस आपदा से होने वाली क्षति को कम करने का सबसे अच्छा उपाय तो

यही है कि जिन भवनों में बड़ी संख्या में लोग एकत्र होते हैं, वहां अच्छी गुणवत्ता के तड़ित चालक ज़रूर लगने चाहिए। ऐसे उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने चाहिए व इनका समुचित उत्पादन अपने देश में होना चाहिए। विशेषकर स्कूलों व अस्पतालों में ये उपकरण अवश्य लगने चाहिए। झारखंड में आकाशीय बिजली गिरने सम्बंधी सबसे दर्दनाक हादसे स्कूलों में ही हुए हैं।

उम्मीद है कि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन कार्यक्रम में भविष्य में आकाशीय बिजली गिरने की ओर समुचित ध्यान दिया जाएगा। **(स्रोत फीचर्स)**